प्रातःक्लास 20-10-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओम इन आंखों से भल दादा को देखो परन्तु बुधि से याद शिव बाबा को करो अर्थ सहित। मनमनाभव मद्याजीभव का भी अर्थ यह है। शिव बाबा को याद करना और बेहद सुख की राजाई को याद करना। कोई और तकलीफ नहीं है। निरोगी भी बनना है। और डबल सिरताज विश्व का मालिक भी बनना है। यह बुधि में जरूर याद रखना है। (याद की यात्रा)"

ओमशान्ति। यह 15मिनट क्या कर रहे थे। ईश्वर निरोगी बनने लिये याद कर के सतोप्रधान बन रहे थे। क्योंकि तुम जब अपनी राजधानी में सतोप्रधान थे तो निरोगी थे। कंचन काया थी। 21जन्मों के लिये निरोगी बनना है। कितना सहज है। कोई दवाई आदि करने की बात नहीं। बाप अविनाशी सर्जन भी है तो वैद भी है। कितनी सहज युक्ति बतलाते हैं। सिर्फ कहते हैं अपने को आत्मा समझ बापको याद करने से ईश्वर हैल्दीश्वर वेल्दी बनना है। कहां के लिये? नई दुनिया के लिये। इस संगम युग पर ही तुम अमर पद पाते हो। वहां कोई रोग बिमारी आदि कुछ भी नहीं होता। सतोप्रधान दुनिया है ना। सभी निरोगी। बाप तुम बच्चों को 100% हैल्दी बनाते हैं। तो ऐसे बाप को कितना खुशी से याद करना चाहिए। हर्षित मुख होकर। बाप गैरन्टी देते हैं मीठे2बच्चों तुम्हारे जो भी पाप हैं जिससे तुमदुःख उठाते आये हो वह इस योग अग्नि से सभी पाप भस्म हो जावेंगे। जले थे। 5000वर्ष पहले भी तुम निरोगी बने थे। अनेकानेक वार बने हो। बाप ने स्मृति दिलाई है। बराबर हम आत्मायें हर 5000वर्ष बादश्रीमत पर चलकर हैल्दी बनते हैं। सो भी जन्म-जन्मान्तर अर्थात 21 जन्मों के लिये। जो अभी पुरुषार्थ कर पद पावेंगे वही कल्प2 पद पाते रहेंगे। अच्छी रीत योग लगावेंगे तो सजाओं से छूट जावेंगे। नहीं तो फिर कल्प-कल्पान्तर सजा खानी पड़ेगी। बाप एक सेकण्ड में मुक्ति जीवनमुक्ति का वरसा देते हैं। बच्चा मां के गर्भ से बाहर निकला और वरसे का हकदार बना। उसमें बच्चे और बच्चियां होती हैं। यहां तुम सभी बच्चे ही बनते हो। बाप को पहचाना और स्वर्ग का वरसा पा लिया। फिर है पुरुषार्थ करना उच्च पद पाने का। जितना याद की यात्रा में जुटी रहेंगे उतना ही उच्च पद पावेंगे। और कोई तकलीफ नहीं। पढ़ने लिए कोई किताबें आदि भी नहीं। इनको कहा जाता है ज्ञान और विज्ञान। वास्तव में सच्चा2 ज्ञान-विज्ञानभवन तो यह है। वह तो सिर्फ नाम मात्र है सबे गवर्मेन्ट का ज्ञान विज्ञान भवन। जहां अनेक भाषाओं में लेक्चर होती है। तुम तो उस अमरपुरी में जाते हो जहां एक भाषा एकराज्य होता है। इन ल0ना0 का एकराज्य था। दूसरा कोई खण्ड नहीं था। भारत को सच्चखण्ड झूठ खण्ड कहते हैं। यह भारत ही अविनाशी खण्ड है, यह कब विनाश नहीं होता। शास्त्रों में दिखाया है महाप्रलय हो जाती है। परन्तु प्रलय तो होती नहीं हैं। इनको छोटी प्रलय कहेंगे। सिर्फ एक भारत खण्ड रह जाता है। बाकी सभी खण्ड विनाश को पाते हैं। एक भारत खण्ड कब विनाश को नहीं पाता। बाकी हां तमोप्रधान झूठखण्ड बन जाता है। किससे झूठ खण्ड बनता, सच्च खण्ड किससे बनता यह भी अभी तुम्हारी बुधि में है। आधा कल्प भक्ति से झूठखण्ड बन जाताहै। बाप कहते हैं वेदों शास्त्रों यज्ञ तप दान पुण्य आदि से कुछ भी मेरे को प्राप्त नहीं कर सकते हैं। इनसे तो और ही तुम दुर्गति को पाते आये हो। समझते हो हम तमोप्रधान बने हैं। बनना ही है। सृष्टि को भी सतोप्रधान से सतो रजो तमोप्रधान बनना ही है। नीचे उतरना पड़ता है। यह खेल है। अभी फिर सतोप्रधान बनना है। कैसे बनें, उसके लिये यह पुरुषोत्तम संगम युग है। उत्तम ते उत्तम पुरुष बनेंगे तो नारी भी बनेंगी ना। तुम पुरुषोत्तम और पुरुषोत्तमनी बनते हो। जो जितना पुरुषार्थ करेंगे उतना ही उच्च पद पावेंगे। पवित्र भी बनना है। बाप ने समझाया है जब तुम पवित्र थे तो विश्व के मालिक थे। डबल सिरताज थे। लाईट का भी ताज था। यह भी सिर्फ समझाने लिये दिखाया जाता है। बाकी वहां कोई ऐसी लाई दिखाई नहीं पड़ती है। वहां सभी पवित्र ही रहते हैं। इसलिये पवित्रता का ताज (लाईट) दिखाया जाता है। बाकी ऐसी रोशनी कोई बाहर से चमकती नहीं हैं। फिर जब वामभार्ग में गिरते हैं तो यह निशानी नहीं रहती। भल सन्यासी आदि को देते हैं परन्तु वह आर्टीफिशल दे देते हैं। देवतायें तो हैं सर्वोत्तम पवित्र।

वह है ही स्वर्ग में। उनको कहा जाता है गोल्डेन एज। अभी है आयरन एज। आत्मा आयरन एजेड बनती है तो जेवर भी आयरन एजेड बन जाती हैं। गाते भी हैं ना मैं निर्गुण हारे में कोई गुण नहीं। रहमदिल बाप को ही कहा जाता है। विलीसफुल नालेजफुल प्युरिटीफुल उनको ही कहा जाता है। वह सभी बातों में परफेक्ट है। सुप्रीम कहा जाता है। और कोई आत्मा को सुप्रीम नहीं कहेंगे। सिवाय एक बाप के। एक बाप ही सदैव वहां रहते हैं। बाकी तो सभी हैं देहधारी। शरीर धारण कर आते हैं पार्ट बजाने। हरेक आत्मा को जो शरीर मिलता है उस पर नाम जरूर पड़ता है। हर जन्म में नाम रूप देश काल फीचर्स बदलते हैं। वर्ष गुजरा, मास गुजरा, घंटे गुजरे . . सतयुग से लेकर गुजरते2 अभी कलियुग अन्त तक आये गिरे हो। अभी तुम बच्चों को स्मृति आई है। कैसे हम सतोप्रधान से उतरते2 आकर तमोप्रधान पतित बने हैं। 84 जन्म पूरे हुये। अभी फिर पहले नम्बर में जाना है। वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी जो रिपीट कहा जाता है। वह सतयुगी हिस्ट्री जागराफी रिपीट कहा जाता है। कलियुग की तो चल ही रही है। फिर सतयुग के हिस्ट्री जागराफी की रिपीट होनी है। जिसके लिये ही अभी तुम पुरुषार्थ कर रहे हो। तुम जानते हो हम अपने बेहद के बाप से बेहद के सुख का वरसा फिर से लेते हैं। यह 84 का चक्र बुधि में याद रहना चाहिए। बाप से हमने यह सतयुगी राज्य अनेक बार लिया है। वन्डर आफ द वर्ल्ड दिखाते हैं ना। जो ताज महल आदि माया के सात वन्डर्स हैं। माया के वन्डर्स हैं सात। बाप का वन्डर तो एक ही है जिसको स्वर्ग पैराडाईज कहा जाता है। यहां के वन्डर्स में क्या रखा है। सुख की तो बात ही नहीं। यह तो बैठकर बनाये हैं। जैसे चीन की दीवाल कहते हैं। बड़ी मेहनत से बनाई है। मनुष्यों को मालूम नहीं है। वन्डर आफ वर्ल्ड सच्चमुच यह आबू का दिलवाला मंदिर हैं। जिसमें आदि देव आदिदेवी का और बच्चे बैठे हैं। ऊपर में हैस्वर्ग। नहीं तो कहां बनावेंगे। ऊपर में राजाई, नीचे नीचे में तपस्या कर रहे हैं। अभी तुम हो राजऋषि। यह है हठयोग ऋषि। ऋषि पवित्र को कहा जाता है। पवित्रता तो जरूर चाहिए ना। फिर आधा कल्प पवित्र हो रहेंगे। ऐसे नहीं फिर विख से जन्म ले पवित्र बनेंगे। जैसे सन्यासी बनते हैं। नहीं। श्रीकृष्ण को महात्मा कहते हैं। परन्तु वह तो स्वर महात्मा हैं। यह सन्यासी लोग तो फिर भी विकार से जन्म ले महात्मा बनते हैं। इन बातों को मनुष्य नहीं जानते। बड़े अच्छे2 नामीग्रामी सन्यासी हैं। बम्बई में एक शेर को पालने वाला सन्यासी था। शिमले में भी शेर ले गया था। परन्तु महान व्यभिचारी। फिर शादी कर बच्चे आदि भी पैदा कर लिया। शुरू में उनके पास बहुत बड़े2 आदमी जाते थे। ऐसे2 सन्यासियों के लाखों फालोअर्स बन जाते हैं। नाम वाला हो जाता है। तुम कोई के अन्धश्रधालु फालोअर्स नहीं हो। फालोअर नाम तो ठहरता भी नहीं। कहां2 वह सन्यासी कहां वह गृहस्ती टट्टू। फालोअर को तो फिर पूरा फालोअर करना चाहिए। तुम सच्चे2 फालोअर्स हो। पवित्र भी बनते हो। तुमको फालो करना है शिव बाबा को। शिव की बारात सेना है ना। शिव बाबा की कितनी बारात है? 4½ सौ करोड़। शंकर की बारात नहीं कह सकते हैं। शिव की बाबरात है। शंकर तो वास्तव में है नहीं। यह भक्ति मार्ग में अनेक ढेर के ढेर चित्र बनाते हैं। अम्सी सूढ़ वाला गणेशऐसा कोई हो सकता है क्या। बड़े मिनिस्टर्स आदि की भी बुधि नहीं चलती है। सूढ़ वाला देवता फिर कहां से आया। ऐसे कोई मनुष्य होते हैं क्या। हनुमान बन्दर को कितना पूजते हैं। आगे तुमको भी यह समझ नहीं थी। अभी बाप ने कितनी समझ दी है। बाप क्या से क्या बनाते हैं। पहले तो गुरु आदि लोग जो सुनाते थे वह सत सत करते रहते थे। अभी तुम नहीं मानेंगे। तुम समझते हो ऐसे हो नहीं सकता। भक्ति मार्ग में क्या2 करते रहते हैं। कितना बेस्ट आफ टाईम करते हैं। लौकिक बाप भी बच्चों को धन देता है तो कोई कोई कपूत बच्चे हो पड़ते हैं तो वह झट धन उड़ा देते हैं। वह हैं हद के कपुत बच्चे। अभी बेहद का बाप तुम बच्चों को कहते हैं मीठे मीठे बच्चों आज से 5000 वर्ष पहले तुमको विश्व की बादशाही दी थी। कितने हीरे जवाहर आदि थे। तुम्हारे शास्त्रों में भी हैनामागर से देवताएं निकलेरत्नों की थाली भरकर देते थे। अभी तुम झोली भरते हो ना। यह है ज्ञान रत्न जिससे झोली भरनी है। बाप को याद नहीं करते हैं। तो सारा ज्ञान बह जाता है। धारणा नहीं होती।—

20-10-68

सतयुग में तुम कितना साहुकार थे। विश्व के मालिक थे। अथाह धन, हीरे जवाहर थे। भक्ति-मार्ग में ही सोमनाथ के मंदिर को कितना सजाया था। तो सतयुग में कितना अथाह धन होगा। बाप कहते हैं इतना सभी अथाह धन कहां गवांया? भक्ति-मार्ग में सारा वेस्ट किया। मंदिर बनाकर दान-पुण्य किये, लूट कर ले गये। भक्ति में धक्का खाते धन गंवाते2 अभी एकदम खाली हो गये हो। फिर बाप आकर सालवेन्ट बनाते हैं। भारत 100% सालवेन्ट था। फिर 100% इनसालवेन्ट बना है। भीख मांग रहे हैं। चित्र में भी तुमने दिखाया है। इसमें डरने की कोई बात ही नहीं। भारत बेगर तो बरोबर है। तुम बच्चों को यह स्मृति आई है हम विश्व के मालिक, बड़े ही साहुकार थे। अभी भारत क्या बन गया है। धन बिगर तो सुख होता ही नहीं। बेहद का बाप ज्ञान का सागर तुम बच्चों को अविनाशी ज्ञान रत्नों का खज़ाना देते हैं। तो यहां बैठे बाप को भी याद करो, राजधानी को भी याद करो। तुम कितना साहुकार थे। हरेक चीज़ बिल्कुल ही नई थी। हीरे जवाहर की खानियां थी। 5 तत्व भी वहां सतोप्रधान होने कारण आर्डर में रहते थे। प्रकृति दासी बन जाती है। कब बेकायदे गर्मी, वा बेकायदे वर्षा आदि हो न सके। नदियों की उथल-पुथल आदि कोई भी बेकायदे काम नहीं होता। दुःख की रिंचक भी बात नहीं। वहां थोड़ेही अगरबत्तियों आदि की दरकार रहेगी। वहां तो नेचरल खुशबूं होती हैं। बदबूं वाली कोई चीज़ होती ही नहीं। यह लकड़ियां आदि थोड़ेही वहां जलाते हैं जो धूआं हो जावे। नाम ही है स्वर्ग। हैविन। अभी तुम पढ़ रहे हो। जैसे अलफ बे नीचे धरती पर बैठ पढ़ाते हैं ना। बाप भी देखो कैसे बैठ पढ़ाते हैं। भगवानुवाच तो है ना। परन्तु भगवान कौन है यह मनुष्यों को पता नहीं है। भगवान को तो पत्थर भितर में ठोंक दिया है। और फिर कृष्ण को भगवान कह देते। वह तो है नई दुनिया का प्रिन्स। कितना फर्क है। इस संगम युग पर ही फर्क का मालूम पड़ता है। बाप की जीवन कहानी में, पूरे 84 जन्म लेने वाले का नाम डाल दिया है। तो कितना हाहाकार हो गया है। फिर जयजयकार होगा। हाहाकार के बाद होना है जयजयकार। खूनी नाहक खेल बना हुआ है। तो तुम देख भी न सकेंगे। कच्ची अवस्था वाले तो तो डर से ही मर जावेंगे। यवनों की है बहुत बड़ी लड़ाई। रक्त की नदियां बहनी हैं। बाहर में नहीं। वहां तो गोले छोड़ेंगे। स्वास लिया और यह मरा। यहां है खूनी नाहक मौत। कौरवों और यवनों की लड़ाई होती है। यहां। बम्ब कोई यहां नहीं आवेंगे। यहां भारत को बहुत दुःख भोगना होता है। फिर अथाह सुखों में चले जावेंगे। अति दुःख से फिर अति सुख मिलेगा। यह अनादि खेल बना हुआ है। यह बाप विस्तार से बैठ समझाते हैं। बाकी नदरैल में तो कहते हैं मीठे2 बच्चे तुम जानते हो बाप आया हुआ है हमको अमरकथा सुनाने। सूक्ष्मवतन वा मूलवतन में नहीं सुनते हैं। बाप को तो सुनाने लिये जरूर मुख चाहिए ना। इसको कहा जाता है ज्ञान-अमृत। अमृत कोई पानी नहीं है। नालेज है परन्तु समझाने लिये कहा जाता है अमृत छोड़ विष काहे को खाये। मनुष्य फिर पानी को ही अमृत समझ कहां-कहां पहाड़ों पर जाते हैं। पहाड़ों पर मंदिरों में गऊ का मुख बना दिया है। पहाड़ों से पानी तो सदैव आता ही रहता है। कुंआ में भी पानी इकट्ठा होता है ना। तो वह सभी है भक्ति मार्ग। कितने कष्ट सहन कर तीर्थों पर जाते हैं। कोई तो रास्ते में ही मर जाते हैं। तुम्हारी यात्रा कितनी सहज है। खाते-पीते भोजन बनाते तुम याद की यात्रा में रह सकते हो। बाप ने कहा है बच्चों मुझ बाप को याद करेंगे तो तुम्हारे सभी पाप कट जावेंगे। यह है योग-अग्नि। वह है काम अग्नि। अभी सभी काम-चिखा पर बैठ जल मरे हैं। काले हो पड़े हैं। सभी कब्रदाखिल हैं। फिर मैं आकर सभी को जगाकर ले जाता हूं। डायरेक्शन देता हूं अपने को आत्मा समझो। आत्मा अविनाशी है। उनको पार्ट मिला हुआ है। उनको कहा जाता है अनादि अविनाशी ड्रामा। जो भी $4\frac{1}{2}$ सौ करोड़ आत्मायें हैं सभी अविनाशी पार्टधारी हैं। ऊपर से आता रहता है। फिर बाप आकर सभी को ले जाते हैं। यह पार्ट रिपीटट होता रहता है। कब घिसता नहीं। इतनी छोटी आत्मा भी कब घिसती नहीं। इन आंखों से भी देखी नहीं जाती। जैसे स्टार्स कितने छोटे दिखाई पड़ते हैं। है तो बड़े ना। मून तक भी जाते हैं। यह सभी है सायंस का झूठा घमण्ड। समझते हैं एक एक स्टार में दुनिया है। सायंस से ही सभी सीखते हैं। सायंस से फायदा भी बहुत है। यह बिजली आदि सभी वहां काम में—

आवेंगी। कोई भी वास वाली चीज होती ही नहीं। गईयां भी बहुत दूर2 रहती हैं। उन्हों का गोबर भी सोना जैसा ही होगा। काला छीछी नहीं। जंगल होते ही नहीं। बगीचा ही बगीचा होता है। तो तुम बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए। अतिइन्द्रियसुख का गायन है पिछाड़ी का। स्कूल में भी पिछाड़ी को रिजल्ट निकलती हैं। रिजल्ट देख फिर ट्रान्सफर हो जाते हैं। यह भी रिजल्ट देख, सा० कर फिर ट्रान्सफर होंगे। अच्छे2 जो हार खाकर गिरते हैं सभी को सा० होगा। शुरू में भी तुमको ढेर सा० होते थे खुशी में लाने लिये। तुम तो वहां जैसे फरिश्ते रहते थे। समझते थे यह सच्ची खुदाई खिजमत गार है। क्योंकि बाप तुम बच्चों के साथ मददगार था। जो कुछ देखा पास हुआ नथींग न्यु। फिर भी होगा। इनको कहा जाता है भावी। कोई मरता है तो मनुष्यकहते हैं ईश्वर की भावी। परन्तु ईश्वर कहते हैं ड्रामा की भावी। यह बना बनाया ड्रामा है। मैं भी ड्रामा के बन्धन में बांधा हुआ हूं। एक सेकण्ड भी आगे पीछे मैं नहीं आ नहीं सकता। बिल्कुल एक्युरेट ड्रामा चलता है। इनको बेहद का अविनाशी ड्रामा कहा जाता है। बनी बनाई बन रही ... ड्रामा प्लैन अनुसार होना ही है फिर चिन्ता काहे की। ड्रामा अनुसार उनको एक शरीर छोड़ दूसरा लेना ही है। सभी पार्ट धारी हैं। तुमको कब रोना नहीं हैं। हरेक अपना पार्ट बजा रहे हैं। एक पार्ट पूरा किया फिर जाकर दूसरा बजावेंगे। मां-बाप सम्बन्धी आदि सभी बदल जावेंगे। रोने की क्या दरकार है। सतयुग से त्रेता अन्त तक तुम कबरोते ही नहीं। यह पढ़ाई है एक बार पढ़ने से 21 जन्म का वरसा मिलता है। बाप से भी वरसा मिलता है। तुम बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए। अभी यह अन्तिम जन्म हैं। पाई-पैसे के लिये क्या बैठ पढ़ाई पढ़ें। सभी कुछ खत्म हो जाना है। बाप कहते हैं गृहस्थ व्यवहार भल सम्भालो। परन्तु श्रीमत पर चलो। बाप को ट्रस्टी बनाकर राय लेते रहो। भल मकान आदि बनाओ विलायत घूमने जाओ। बाबा कोई मना नहीं करते हैं। डायरेक्शन सभी देते रहेंगे। पवित्र रहना है। बाप की याद में रहना है। दैवीगुण भी धारण करना है। और कुछ भी मेहनत आदि नहीं कराते हैं। बाप को पहचाना, स्वर्ग का वरसा तो होगा ही। तुम कोई सगीर नहीं हो बालग हो। शरीर बड़ा है। आत्मा को तो सगीर वा बालग नहीं कहा जाता सकता। यह बड़ी समझने की बातें हैं। आत्मा बहुत छोटी है, 84 जन्मों का पार्ट बजाती ही रहती है। यह ज्ञान कोई शास्त्रों में नहीं हैं। न कोई मनुष्य जानते हैं। बाप ही बैठ तुमको अच्छी रीत समझाते हैं। वही ज्ञान का सागर है। नालेजफुल है। उनको झाड़ का बीज रूप कहा जाता है। सतचित, आनन्द का सागर, पवित्रता का सागर है ना। कृष्ण की महिमा और बाप की महिमा बिल्कुल ही अलग है। अभी तुम बेहद के बाप से वरसा लेते हो। यह (ल०ना०) बनने के लिये। शिव बाबा से पढ़ते हो यह बनने लिये। नई बात है ना। नई दुनिया के नई बात नया सुनाने वाला है ना। वह तो समझते हैं कृष्ण सुनाते हैं। तुम समझते हो कृष्ण अगर होता तो उनको सभी जान लेते हैं। कृष्ण को याद करने से पाप नहीं कटते। पतित-पावन कृष्ण को नहीं कह सकते हैं। एक बाप ही सर्व की सदगति दाता है। पतित दुनिया में कोई भी पावन होता नहीं। अभी तुम यह (देवता) बन रहे हो। तो अब पुरुषार्थ कर सतोप्रधान बनना है। ऐसे नहीं कि पानी से पावन बनना है। नहीं। अपने को आत्मा समझ स्वीट बाप को याद करना है। वह एवर स्वीट बाप है। मोस्ट बिलवेड है। विश्व की बादशाही देते हैं। ऐसे बाप को भूलना न चाहिए। भगवानटीचर बन पढ़ाते हैं। तो और क्या चाहिए। कितनी खुशी होनी चाहिए बच्चों को। इस पढ़ाई से तुम क्या बनते हो? नर से ना०। भगवान कैसे पढ़ाते हैं यह जान लिया ना। बाप हमारा ओबीडियन्ट बाप भी है टीचर भी हैं। सतगुरु भी है। तुमने बुलाया है ना। बाप को निमंत्रण दिया है कि बाबा आओ। आकर हम पतितों को पावन बनाकर ले चलो। बाप कैसे एक्युरेट टाईम पर आते हैं। इसलिये बाप कहते हैं मीठे2 बच्चों। बाप का बच्चों पर बहुत लव है ना। उस लव से ही तुम बच्चों को विश्व का मालिक बनाते हैं। नहीं तो लौकिक बाप तो काम कटारी के नीचे गिरा देते हैं। सारी दुनिया कोसुधर है। एक दो को छुरी मारते रहते हैं। तुम विश्व की बादशाही योगबल से लेते हो। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों को नमस्ते।

****